Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. Sc.), RMC, VKSU.
BA (I) (Subs.). Date - 21.06.2021

कानून के स्वरूप (प्रकृति)

कानून की प्रामाणिकता तीन बातों पर निर्भर है-

1. यह समाज में प्रचलित मूल्यों के अनुरूप होना चाहिए या नागरिकों को यह विश्वास होना चाहिए कि प्रस्तुत कानून उपयोगी एवं सुविधाजनक है।
2. यह नागरिकों की सहमति पर आधारित होना चाहिए
3. यह तर्कसंगत होना चाहिए।

कानून की प्रकृति को लेकर विभिन्न स्कूल्स ऑफ थॉट अपने विचार व्यक्त किए हुए हैं। पश्चिमी परंपरा के अंतर्गत चार व्याख्याएं महत्वपूर्ण हैं जो निम्न है -

1. प्राकृतिक कानून संप्रदाय
2. विश्लेषणात्मक ~~संप्रदाय~~ न्यायशास्त्र
3. ऐतिहासिक न्यायशास्त्र
4. समाजशास्त्रीय न्यायशास्त्र

1. <u>प्राकृतिक न्यायशास्त्र</u> - प्रचलित कानून या अधिनियम की प्रमाणिकता का आधार एक उच्चतर कानून है जिसे प्राकृतिक कानून कहा जाता है। प्राकृतिक कानून की संकल्पना के आरंभिक संकेत प्राचीन यूनान के सोफिस्टों, स्टोइक दार्शनिकों, प्लेटो और अरस्तू के चिंतन में मिलते हैं।

सामाजिक अनुबंध के सिद्धांतकारों (हाब्स, लॉक, रूसो) के अनुसार मनुष्य प्राकृतिक दशा में जिस सूझ बूझ से काम लेते हैं वह प्राकृतिक कानून है। प्राकृतिक कानून भांति

Scanned with CamScanner

सद्भावना, परस्पर सहायता और श्रद्धा की प्रेरणा देते हैं समकालीन विश्व में प्राकृतिक कानून को मानव अधिकारों का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है।

2. विश्लेषणात्मक विचारधारा - कानून के विश्लेषणवादी संप्रदाय ने निरंकुशतावादी और आदर्शवादी दर्शन से प्रेरणा ग्रहण की है जिसका आरंभ प्लेटो से समझा जा सकता है। कानून के संबंध में इनकी धारणा बेंथम और ऑस्टिन के विचारों पर आधारित है। और उसके प्रतिपादन का कार्य हालैंड और सिलोंबी आदि के द्वारा किया गया है। कानून की प्रकृति के बारे में विश्लेषणात्मक न्यायशास्त्र या कानूनी प्रत्यक्षवाद के सिद्धांत की उत्पत्ति 19वीं सदी की आंग्ल अमरीकी कानूनी परंपरा से हुई है। कानूनी प्रत्यक्षवाद कानून के तकनीकी अर्थ को ही उसकी प्रकृति का आधार मानता है। हैंस कैल्सन (188-1973) ने अपनी महत्वपूर्ण रचना 'जनरल थ्योरी ऑफ लॉ एंड स्टेट' में 1961) के अंतर्गत यह तर्क दिया है कि कानून की प्रामाणिकता के दो आधार हैं. 1. यह विधिवत ~~प्र~~स्थापित होना चाहिए 2. यह बुनियादी मानक के अनुरूप होना चाहिए। विश्लेषणात्मक न्यायशास्त्र या कानूनी प्रत्यक्षवाद के आलोचकों ने उन समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है जिन्हें केवल सकारात्मक कानून की सहायता से नहीं सुलझाया जा सकता। कैल्सन ने कानूनी प्रणाली के 'बुनियादी मानक' की अवधारणा प्रस्तुत की, एच ए एल हार्ट ने 'नियमों की संरचना' का विचार रखा। डवोर्किन ने 'सिद्धांत तत्वों' की जो न्यायिक प्रक्रिया में सकारात्मक कानून की पूरक भूमिका निभाते हैं।

→

Scanned with CamScanner